IJCRT.ORG ISSN : 2320-2882

INTERNATIONAL JOURNAL OF CREATIVE RESEARCH THOUGHTS (IJCRT)

An International Open Access, Peer-reviewed, Refereed Journal

मेघवाल समाज रै ब्याव रा लोकगीत : अेक विरोळ

मगराज मेघवाल

शोधार्थी, राजस्थानी–विभाग

जयनारायण व्यास विश्वविद्यालय, जोधपुर

लोकगीत मानखै रै हियै रा भावां नै दरसावै है। अै लोकवाणी रै रूप में प्रवाहित हुयनै लोकगीत कैहलावै है। लोकगीतां रौ सिरजण सामूहिक चेतना द्वारा स्वाभाविक रीति सूं होवै हैं। लोकगीत मानखै रै हियै री वां नैसर्गिक अभिव्यक्ति है जिणमें भाव, भासा अर छंद री नियमितता सूं मुक्त रैय'र स्वच्छंद भाव उजागर होवै है। मिनख जमारै रै मांय भांत–भांत रा विधि–विधान आपणी सांस्कतिक विरासत रौ बखाण करावै। हिन्दू धरम चार आश्रम अर सोळहां संस्कार रै मांय बांटियोड़ो हैं। इण व्यवस्था रौ वरणाव पुराणां ग्रंथां रै मांय देखण नै मिळै पण आज रै इण भौतिकता रै जुग मांय मिनख आपरा पुराणां संस्कार अर रीत–रिवाजां नै भूलतो जा रियो है। पैला जैड़ी रोक–टोक अबार री सामाजिक व्यवस्था में देखण नै नीं मिळै। आज समाज रै मांय आपनै अैड़ा मिनख भी मिळ जावैला जिणांनै इण संस्कारां रै बारै में किणी भांत री जाणकारी नीं है। पैला री मानता रै मुजब करम प्रधानता ही, मिनख जैड़ा करम करतो उणरौ बौ आश्रम हो जावतो पण बखत रै साथै व्यवस्था बदळी अर करम री ठौड़ जलम प्रधान व्यवस्था होयगी। पैला रै बखत रै मांय शुद्र जै संस्कारवान बण जावतो तो उणनै बामण कुळ में मान मिलतो, जै सूरता दिखावतो तो क्षत्रिय कुळ में मान मिलतो। इण भांत जैड़ा करम करतो उण भांत रा फळ मिळता। वर्ण व्यवस्था रै साथै सामाजिक बदलाव भी देखण नै मिळिया। उण बखत रै मानखै रै मांय संस्कारां री कमी आयगी। आ हीज कारण है कै आज आपां सोळहां संस्कारां सूं तीन संस्कारां माथै आयनै अटक गिया। अै तीन संस्कार जलम, ब्याव अर मिरत्यु हीज है।

संस्कारां रौ आयोजन किणी अशुभ सगती नै खतम करण सारु करियो जावै। मेघवाल समाज रै मांय भी अै सगळा संस्कार देखण नै मिळै। समाज रै मांय आज भी खास रूप सूं अै तीन संस्कार हीज मिळै। जिणरै मांय हरख, उमंग अर दु:ख रा भाव देखण नै मिळै। इण संस्कारां रै मांय समाज में घणा लोकगीत सुणण नै आज भो मिळै। इण सगळा संस्कारां नै करण सारु पंडित री खास भूमिका होवै। जिको इण सगळा संस्कारां रै आपरै मंत्रां सूं सम्पन्न करावै। जीवण रै मांय कोई भी संस्कार गूंगो बणण नीं हो सकें। इण सारु उणरै मांय किणी

नीं किणी राग रौ होवणौ जरुरी हैं। इण संस्कारां रै मांय लुगायां आपरी धुन सूं स्वर अर ताल नै मिला'र लोकगीत गाया करै। लोकगीतां रौ जलम कीकर अर किण ठौड़ होवै, इणरौ पडूत्तर आपनै खेत रै मांय हळ चलावतो करसो, सुबै दिन उगण सूं पैला उठनै घट्टी घूमावती लुगायां आपरै काम रै मांय मगन स्वर लहरियां सूं लोकगीत रौ निरमाण करै। पारिवारिक जीवण रै मांय सगळा संस्कारां रै मांय लुगायां री घणी महताऊ भूमिका होवै। मिनख अर लुगाई समाज रूपी गाड़ी रा दोय टायर है जै अेक नीं होवै तो समाज रो गाड़ी नीं चाल सकै। इण सारु हर संस्कार रै मांय लुगायां रौ होवणौ घणौ जरुरी है। आदिकाल सूं भी लुगायां नै समाज रै मांय घणौ मान सम्मान मिलतो रैयो है। पैला रै बखत रै मांय जद आपां पैला रै इतिहास री जाणकारी लैंवा तो आ बात निजर आवै कै पैला रै बखत मांय भी समाज रै मांय लुगायां री घणी महत्तो भूमिका ही औ हीज कारण है कै उण बखत रै समाज रै मांय मातसत्तात्मक सासन व्यवस्था रा चित्राम देखण नै मिळै अर आज रै बखत रै मांय आपणा समाज पित सत्तात्मक सासन व्यवस्था रौ है पण समाज रै मांय लुगायां रौ घणौ मान सम्मान है। मेघवाल समाज रै मांय सगळा संस्कारां नै करावण सारु लाकगीतां रौ घणौ महत्व है जिका लोकगीत विगतवार इण भांत है–

ब्याव रै मौके माथै गाया जावण वाळा लोकगीत– विवाह गृहस्थ जीवण रै भव्य भवन रौ दरवाजो है। गृहस्थ जीवण रै मांय आवण सारु मिनख नै ब्याव संस्कार निभावणौ पड़ै है। औ संस्कार वंस बधोतरी रौ परिचायक है। ब्याव रौ संस्कार लुगाई–मोट्यिार रौ वौ पारस्परिक संबंध है जको धरम अर नियम सूं आबद्ध है। हिन्दू जात में ब्याव अेक धारमिक प्रथा रै रूप में चावौ है। ब्याव रै मांय वर–वधू दोनूं पख रा सगळा परिवार वाळा अर सगां–संबंधी भैळा होवै है। ब्याव रा गीतां में विनायक, पीठी, बन्नी–बन्नी, घोड़ी, मायरो, तोरण, कामण, सेवरो, जुआ–जुई, सामेळा, बधावो, गाळी आद गीत जाया जावै है। ब्याव संस्कार रा लोकगीतां में सबसूं पैला गजानंदजी महाराज नै सिवर्‌यो जावै है। इण मौके जको गीत गायो जावै वौ इण भांत है–

बन्नी थारै सैर मांय जोशी धर जगायो अै,

लिगना रै मिस आवो रंग महल में,

जगायो सुख भर सेन में,

जगायो भर नींद में।

(विनायक गीत)

इण गीत में बींद राजा आपरी घरवाळी सूं मिठाई सारु सगळै सैर रै मांय रात भर फिरै अर सबसूं पैला जोशीजी नै जगावै अर लगन रै मिस रंग महल र मांय आवण रौ कैवे है। पछै बन्ना–बन्नी रै उबटन (हल्दी) रा गीत गाया जावै। बारात रवानगी रै बखत बींद राजा री भाभी देवर रै आंख्यां में काजळ निकाळै अर मां उणनै आपरौ थण निकाळनै दूध पावण रौ दस्तूर करै पछै मां आपरै दूध री लाज राखण खातर उणरी पीठ थपथपावै। उण बखत घोड़ी गीत गायो जावै–

घोड़ी करै औ आखा जी जाखा,

जान चढ़ो केसरिये रा दादा।

चढ़ो रै सवाया।

घोड़ी करै ओ आबा जी झाबा,

जान चढ़ो केसरिये रा भाभा

(घोड़ी गीत)

जान चढ़ण रै बखत भळै भी गीत गाया करै बै इण भांत है–

मसक लाडा थारी मोजड़ी रै,

किंना कंवर परणीजण जाय।

कंवर नरेश जी रा लाडला रै,

सुरेश बीरौ परणीजण जाय।

इण गीत रै मांय बींद राजा री मोजड़ी रौ बखाण करता थकां कैवे कै किणरौ कंवर परणीजण जावै। इणरै पछै सगळा पडूत्तर मिळै अर बार–बार बींद राजा रौ बखाण करै। बारात रवानगी रै बखत रौ अेक खास गीत इण भांत है–

केसरियों लुळ–लुळ पासल फोरै,

जाणै म्हारी जानड़ली कुणजी पधारै,

म्हारा भाबोसा पधारै, घोड़ला सिणगारै

गायड़मल तो लुळ–लुळ पासल फोरै,

जाणै म्हारी जानड़ली कुणजी पधारै।

इण गीत में भाबोसा बारात सारु घोड़ा सिणगारै है, काकोसा जान वाळा नै सिणगारै ह, बीरौ सा ऊंटा नै सिणगारै है अर मामोसा सेवरिया सुधारै। मेघवाल हिन्दू धरम रौ हीज अंग है। इण सारु मेघवाल समाज रै मांय फेरा हिन्दू धरम रै रीत–रिवाज सूं ही बामण नै साखी मान'र करियो जावै। बामण चंवरी तिंयार करिया करै। इण चंवरी रै मांय भांत–भांत देवी–देवतावां रै याद करनै फेरा रा गीत गाया जावै है।

अेक पापड घी में तळियों,

दूजो पापड़ कोरो रै,

म्हारा फूलाबाई चंवरी चढ़िया,

दादोसा रौ मन राखियो रै।

(फेरा रा गीत)

हथळैवो जोड़िया पछै फेरा हुया करै जिणरा गीत इण भांत हुया करै–

पैलो फेरौ लीनो, म्हारै बाबोसा री धीवड़ी,

दूजो फेरो लीनो, म्हारै काकोसा री भतीजी,

तीजो फेरौ लीनो, म्हारै मामोसा री भाणजी,

चौथो फेरो लीनो, बाळक बनड़ी

हमें म्हारा धीवड़बाई होया रै पराया।

(फेरा रा गीत)

जदै चार फेरा पूरा हुय जावै उणरै पछै बन्ना–बन्नी नै चंवरी रै मांय बिठावै अर इणरै पछै सेवरा देवण री रीत हुया करै। सेवरा रा गीत इण भांत है–

जोशी बैठो रा परणाव, जोशी लटपटियो,

जोशी थारै हांडी जितरौ पेट, जोशी लटपटियो,

जोशी थारौ डोयलै जितरौ नाक, जोशी लटपटियो।

(सेवरा रा गीत)

इण गीत में जदै जोशी सेवरा रै मांय टैम घणी लगावै उण बखत दोनूं पख रा लोग जोशी नै बैगो परणावण सारु कैवे। उण बखत लुगायां गाळी गीत गाया करै। इणरै पछै विदाई रौ गीत गायो जावै। इण गीत नै मारवाड़ में सीखड़ली कैयो जावै है। ज्यां अेक दाखला देखणजोग है–

हे ओम्बा पाका अे ओम्बली,

हे मेवड़ा लेहरो खाय,

कोयलड़ी सिद्ध चाली।

हे इतरौ म्हारै बाबोसा रौ लाड

कोयलड़ी सिद्ध चाली।

(विदाई गीत)

मेघवाल समाज रै मांय जदै बारात पाछी आवै इणरै पछै दूजै दिन सगळा देवी–देवतावां रै जात दिरायी जावै। बन्नो–बन्नो देवतावां रै थान जावै अर फेरी लगायनै मन्नत मांगे। जिणनै देवता–फेरणा कैवे। अेक माताजी रौ गीत इण भांत है–

थे तो ओढ़ो ओ माताजी राती–चुंदड़ी,

चुंदड़ियो रै हीरो रौ जड़ाव

जगामग लागी आरती।

(माताजी रौ गीत)

इण तरै मेघवाल समाज रा आ लोकगीतां में ब्याव रा काण–कायदा, रीत–रिवाज, दस्तूर आद रौ सांचौ दरसाव देख्यौ जा सकै है। इणामें हरख अर उमंग रा चितराम भी देख्या जा सकै है।

संदभ–

1. लोक साहित्य : डॉ. विद्या चौहान, सरस्वती प्रकाशन, कानपुर, 1986
2. लोक साहित्य विज्ञान : डॉ. सत्येन्द्र, शिवलाल अग्रवाल एंड कम्पनी, आगरा, 1962
3. राजस्थानी लोकगीत : डॉ. स्वर्णलता अग्रवाल, राजस्थान साहित्य अकादमी, उदयपुर, 1972
4. राजस्थानी लोक साहित्य अध्ययन के आयाम : डॉ. रामप्रसाद दाधीच, जैन संस, जोधपुर, 1979
5. राजस्थानी लोक साहित्य का सैद्धान्तिक विवेचन : डॉ. सोहनदान चारण, राजस्थान साहित्य मंदिर, जोधपुर 1980
6. राजस्थानी लोकगीतों का सांस्कृतिक अध्ययन : डॉ. मदनलाल शर्मा, रश्मि प्रकाशन, जोधपुर, 1987
7. राजस्थानी लोकगीत : सूर्यकरण पारीक, हिन्दी साहित्य सम्मेलन, प्रयाग
8. राजस्थानी लोक साहित्य एवं संस्कृति : डॉ. नंदलाल कल्ला, राजस्थानी ग्रंथागार, जोधपुर, 2000

9. राजस्थानी लोकगीतों की संरचना : डॉ. योजना शर्मा, विवेक पब्लिशिंग हाउस, जयपुर, 2000
10. जैसलमेर के शृंगारिक लोकगीत : डॉ. भूराराम सुथार, अंकुर प्रकाशन, उदयपुर, 2008
11. राजस्थानी गीतां रो उजास : डॉ. उषा गोयल, साहित्यगार, जयपुर, 2011
12. गीतां रो हेलो : रविप्रकाश 'नाग', कृष्णा ब्रदर्स, अजमेर, 1991